अर्द्धवार्षिक परीक्षा 2022–23

कक्षा – दशम्

विषय : हिन्दी

निर्धारित समय : 3:15 घण्टे | पूर्णांक : 70

सामान्य निर्देश :

1. प्रत्येक प्रश्नों के उत्तर खण्डों के क्रमानुसार ही करिए।
2. कृपया जांच लें प्रश्न पत्र में प्रश्नों की कुल संख्या 28 तथा मुद्रित पृष्ठों की संख्या 04 है। कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
3. घण्टी का प्रथम संकेत प्रश्न पत्रों के वितरण एवं प्रश्न पत्र को पढ़ने के लिए है। 15 मिनट के पश्चात घण्टी के द्वितीय संकेत पर प्रश्न पत्र हल करना प्रारम्भ करें।
4. प्रश्न पत्र दो खण्डों में विभाजित है। खण्ड–अ और खण्ड–ब। खण्ड–अ में 20 अंक के बहुविकल्पीय प्रश्न दिये गये हैं। खण्ड–ब में 50 अंक के वर्णनात्मक प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक के सम्मुख अंक निर्धारित हैं।

modelpaper.info

खण्ड–अ

1. रायकृष्णदास कौन थे– (1)
   क. निबन्धकार ख. गद्य–गीतकार
   ग. कहानीकार घ. नाटककार
2. 'धर्मयुग' नामक पत्रिका के सम्पादक थे– (1)
   क. मोहन राकेश ख. भारतेन्दु
   ग. धर्मवीर भारती घ. महावीर प्रसाद द्विवेदी
3. गुलाबराय द्वारा रचित है– (1)
   क. मेरा जीवन प्रवाह ख. मेरी आत्म कहानी
   ग. मेरी असफलताएं घ. मेरी आत्मकथा
4. खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है– (1)
   क. प्रिय प्रवास ख. कामायनी ग. साकेत घ. उर्वशी
5. ममता पाठ गद्य की किस विधा में है– (1)
   क. उपन्यास ख. एकांकी ग. नाटक घ. कहानी
6. घनानन्द कवि थे– (1)
   क. आदिकाल ख. भक्तिकाल ग. रीतिकाल घ. आधुनिक काल

7. कामायनी महाकाव्य के रचनाकार हैं–
क. मैथिलीशरण गुप्त ख. सूर्यकान्त त्रिपाठी
ग. सुमित्रानन्दन पंत घ. जयशंकर प्रसाद

8. रीति सिद्ध कवि हैं–
क. बोधा ख. आलम ग. बिहारी घ. केशवदास

9. कठिन काव्य का प्रेत किस कवि को कहा जाता है– (1)
क. घनानन्द ख. भूषण ग. सेनापति घ. केशवदास

10. द्विवेदी युग का नाम किस साहित्यकार के नाम पर पड़ा– (1)
क. भारतेन्दु ख. प्रेमचन्द
ग. महावीर प्रसाद द्विवेदी घ. जयशंकर प्रसाद

11. करुण रस का स्थायी भाव है– (1)
क. निर्वेद ख. शोक ग. हास घ. रति

12. सोरठा छन्द के पहले एवं तीसरे तथा दूसरे एवं चौथे चरण में क्रमशः मात्राएं होती हैं– (1)
क. 13–11 ख. 12–12 ग. 11–13 घ. 24–24

13. पीपर पात सरिस मन डोला में अलंकार है– (1)
क. रूपक ख. उपमा ग. उत्प्रेक्षा घ. अनुप्रास

14. चौराहा में समास है– (1)
क. द्वन्द्व ख. बहुब्रीहि ग. कर्मधारय घ. द्विगु

15. मकान का तत्सम है– (1)
क. भुवन ख. घर ग. भवन घ. उपवन

16. प्रत्येक शब्द में उपसर्ग है– (1)
क. प्रत्य ख. प्र ग. प्रति घ. प्रत्

17. पंकज, वारिज, जलज शब्द किसके पर्यायवाची हैं– (1)
क. पानी ख. चन्द्रमा ग. कीचड़ घ. कमल

18. अत्याचार में सन्धि है– (1)
क. दीर्घ ख. गुण ग. यण घ. वृद्धि

19. फले शब्द में विभक्ति एवं वचन है– (1)
क. सप्तमी एकवचन ख. द्वितीया बहुवचन
ग. प्रथमा द्विवचन घ. चतुर्थी एकवचन

20. अपठत में लकार, पुरुष एवं वचन है– (1)
क. लट् लकार, प्र.पु. एकवचन ख. लङ्लकार, म.प. बहुवचन
ग. लोट् लकार, उ.पु. द्विवचन घ. लट्लकार, म.पु., बहुवचन

modelpaper.info

खण्ड–ख

1. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए– (2x3=6)

मित्रता के लिए यह आवश्यक नही है कि दो मित्र एक ही प्रकार के कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों इसी प्रकार प्रकृति एवं आचरण की समानता भी वांछनीय नहीं है। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में भी बराबर प्रीति एवं मित्रता रही है।

क. उपरोक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

ख. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग. मित्रता के लिए क्या वाछनीय नहीं है।

अथवा

मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था। मैं आजीवन अपनी झोपड़ी खोदवाने के डर से भयभीत रही। भगवान ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ अब तुम इसका मकान बनाओ या महल।

क. गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

ख. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

ग. झोपड़ी खोदवाने के भय से कौन भयभीत था ?

22. निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी एक की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी लिखिए। (2+3+2)

modelpaper.info

क. सोहत ओढ़ै पीत पटु, स्याम सलोने गात
मनौं नीलमनि शैल पर, आतपु परयौ प्रभात।।

ख. ऊधौ मोहि व्रज बिसरत नाहीं
वृंदावन गोकुल वन उपवन, सघन कुंज की छांही।
प्रात समय माता जसुमति, अरु नन्द देखि सुख पावत।।
माखन रोटी दही सजायौ, अति हित साथ खवावत।।
सूरदास धनि धनि ब्रजवासी, जिनसौ हित यदुतात।।

23. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए– (2+3=5)

एषा नगरी भारतीय संस्कृतेः संस्कृतभाषायाश्च केन्द्रस्थलम् अस्ति। इत एव संस्कृत वाङमयस्य संस्कृतेश्च आलोकः सर्वत्र प्रसृतः। मुगल युवराजः दाराशिकोहः अत्रागत्य भारतीय दर्शन शास्त्राणाम् अध्ययनम अकरोत। सः तेषां ज्ञानेन तथा प्रभावितः अभवत्, यत तेन उपनिषदाम अनुवादः पारसी भाषायाम् कारितः।

अथवा

अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति सः पण्डितः।।

24. क. अपनी पाठ्य पुस्तक से कण्ठस्थ किया हुआ कोई एक श्लोक लिखिए जो इस प्रश्न पत्र में न आया हो– (2)

ख. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नो के उत्तर संस्कृत में लिखिए। (4)

1. कः वीरेण पूज्यते? 2. पदेन विना किं दूरं याति।

3. दुर्मुखः कः आसीत् ? 4. संस्कृत विश्वविद्यालयः कुत्र अस्ति?

25. क. निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन परिचय एवं रचनाएं लिखिए। (4)

1. जयशंकर प्रसाद 2. डा. राजेन्द्र प्रसाद

3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

ख. निम्नलिखित में से किसी एक कवि का जीवन परिचय एवं रचनाएं लिखिए– (4)

1. तुलसीदास 2. रसखान 3. पन्त

26. किन्हीं तीन वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए– (6)

modelpaper.info

क. मैं विद्यालय जाऊंगा ख. मोहन पढ़ता है।

ग. सोहन जाता है। घ. राष्ट्र भाषा हिन्दी है।

ङ. वे गाते हैं।

27. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए– (7)

क. राष्ट्रीय त्योहार ख. भारतीय कृषक

ग. मेरा प्रिय कवि घ. बढ़ती जनसंख्या : एक समस्या

28. स्वपठित खण्डकाव्य के नायक का चरित्र चित्रण कीजिए। (5)

अथवा

स्वपठित खण्ड काव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।